P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-1* September- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

बाल विकास में बाल कला का महत्व

लवली वार्ष्णेय
शोधार्थी,
फाइन आर्ट विभाग,
अलीगढ़ मुस्लिम
विश्वविद्यालय,
अलीगढ

सारांश

एक बच्चे का दृष्टिकोण अन्य के दृष्टिकोण से काफी भिन्न होता है और आश्चर्य, भय, उत्साह, लड़कपन, शरारत और सादगी से भरा होता है। जीवन के प्रारंभिक वर्षों में माता–पिता और शिक्षकों की कहानियां बच्चों के मनोविकास का मुख्य हिस्सा है। फिर भी बच्चे और वयस्क के परिप्रेक्ष्य के बीच एक मौलिक अंतर होता है। समय के साथ बच्चे अपने निरीक्षण से विचार करना शुरू कर देते हैं। शिक्षक हमें बताते हैं, कि कला कौशल, मानसिक–विकास और समस्या सुलझाने की क्षमताओं को प्रोत्साहित करती है और इसे पढ़ने–लिखने गणित और विज्ञान जैसे अन्य प्रमुख विषयों को पढ़ाने और समझाने के लिए भी प्रभावी ढंग से उपयोग किया जा सकता है। कला सभी क्षेत्रों में अलग–अलग तरह से प्रयोग की जा सकती है। चिकित्सक हमें बताते हैं, कि मूल्यवान है, क्योंकि यह बच्चों को अपनी दुनिया को संसाधित करने की अनुमति देती है। कलाकार हमें बताते हैं कि कला सुदंरता और अभिव्यक्ति के स्रोत के साथ–साथ कला स्वयं के लिए भी महत्वपूर्ण है। बच्चे हमें बताते हैं कि कला मजेदार है, और एक ऐसी गतिविधि है, जिससे कि वे आनंद लेते हैं। कला स्वाभाविक रूप से रचनात्मकता से जुड़ी हुई है, जो एक ऐसी विशेषता है, जो व्यक्तियों, संगठनों और संस्कृतियों की सफलता के लिए सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक है। सच्चाई यह है कि कला बच्चों के चहुमुखी विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। कला के द्वारा वे सभी विषयों को बहुत बेहतर तरीके से सीखते हैं।

मुख्य शब्द : बाल विकास मनोवैज्ञानिक।

प्रस्तावना

''प्रत्येक बालक में एक कलाकार होता है, परन्तु समस्या यह है कि वह बालक जब पढ़ता है, तो कलाकार कैसे बना रहे।''

–पाब्लो पिकासो

बच्चों को कला पसंद होती है, क्योंकि यह मजेदार है और उन्हें यह एक तरह की प्रामाणिक आत्म–अभिव्यक्ति प्रदान करती है। बच्चों की कला कई लोगों के लिए कई तरह से जोड़ें रखती है। एक अभिभावक के लिए कला एक बच्चे की कल्पना का प्रदर्शन है। एक शिक्षक के लिए यह एक शिक्षण उपकरण है। एक मनोवैज्ञानिक के लिए कला एक बच्चे के दिमाग को समझने का एक तरीका है। घर के बुजुर्गों के लिए कला उनसे जुड़ा रहने का एक तरीका है। लाइब्रेरियन के लिए यह पुस्तक ज्ञान को बढ़ाने का एक तरीका है। एक बालक के लिए कला मस्ती करने, निर्णय लेने और विकल्पों को व्यक्त करने का एक तरीका है। बच्चे कभी अपने काम की आलोचना नहीं करते हैं। वह स्वतंत्र होकर अपनी खुशी से चित्रण करते हैं। कला बच्चों को उनकी पसंद, विचार और भावनाओं की स्वतंत्रता प्रदान करती है। एक चित्र हज़ार शब्दों को व्यक्त करता है। चित्र भावनाओं और जटिलताओं को इस तरह से संवाद करते हैं, कि शब्द नहीं कह सकते। गैर–मौखिक रूप से संवाद करने की क्षमता बच्चों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। कला एक शक्तिशाली उपकरण है, जो बच्चों को अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने की क्षमता देती है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र में बच्चों के बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, भाषायी तथा अन्य विकास के लिए कला किस प्रकार से महत्वपूर्ण है। इस बात पर ध्यान आकर्षित किया गया है।

साहित्यावलोकन

जन्म लेने के बाद मनुष्य ने अपनी असहाय स्थिति को देखा। जीविकोपार्जन के लिए शरीर को शीत ताप और वर्षा से सुरक्षित रखने के लिए और भयंकर जानवरों से अपनी सुरक्षा के लिए अनेकों प्रयत्न किए। गुफाओं को

अपना निवास स्थान बनाया। अपनी सुरक्षा व शिकार करने के लिए पत्थर के औजार व हथियार बनाये। मनुष्य ने अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति धूमिल प्रकाश में आखेट और पशुओं की छवियों को गुफाओं की दीवारों पर नुकीले पत्थर व कोयले और प्राकृतिक रंगों के माध्यम से आड़ी–तिरछी रेखाओं में चित्र बनाकर कर दी। इन प्रागैतिहासिक चित्रों की तुलना हम आज की बाल कला से कर सकते हैं। मानव जीवन के साथ ही किसी न किसी रूप में बाल कला का उद्रव भी माना जाता है।

बाल कला का उद्रम

जन्म लेते ही बालक स्वतंत्र अभिव्यक्ति करना प्रारंभ कर देता है। नन्हीं उम्र में बालक अपनी विभिन्न क्रीडाएं शुरू कर देता है। जैसे–मिट्टी में खेलना, शरारत करना, विभिन्न प्रकार की अठखेलियां करना उसकी सहज वह स्वाभाविक प्रवृत्तियां बन जाती हैं। ठीक उसी प्रकार उल्टी–सीधी पेंसिल पकड़ना खड़ीया या अपनी उंगलियों से मिट्टी में कुछ भी उकेरना उसके लिए खेल बन जाता है, यही उसकी स्वतंत्र अभिव्यक्ति है जिसे बाल कला का प्रारंभिक रूप कहा जा सकता है। वास्तव में बाल कला का अर्थ है –अपनी इच्छा पूर्ति और खुशी के लिए स्वतंत्र रूप से रखी गई कला। इसी संदर्भ में बालक चित्रकला को सबसे प्रिय व सरल अभिव्यक्ति का साधन समझता है।

1854–59 में प्रकाशित एक पुस्तक में हरबर्ट स्पैनर ने बालक को एक क्रांतिकारी कलाकार माना है। 1887 में बाल कला शब्द का प्रयोग इटली के कोराडोरिकी ने अपनी पुस्तक ''एल'' आर्टे देई बाम्बिनी (बच्चों की कला) में किया है। 1903 में जेम्स सली ने अपनी पुस्तक ''स्टडीज ऑफ चाइल्ड हुड'' में बाल कला का उल्लेख करते हुए बताया है कि बालक बिना समझे जो भी उल्टी सीधी रेखाओं में चित्र बनाता है। स्वतंत्र रूप से असंतुलित आकृतियों में इच्छा अनुसार हाथ पैर बनाता है, वही उसकी कला है।

बाल कला को जर्मनी के ''लिच वर्क'' ने आदिमानव की कला के साथ ही रखा है। बालक की कला में मौलिकता होती है पुनरावृत्ति नहीं होती। क्योंकि वह जो कुछ चित्रित करता है वह उसका पूर्व ज्ञान व कल्पना का मिश्रण होता है। आधुनिक कलाकार की तरह बालक सूक्ष्म में नवीनतम प्रयास करता रहता है।

बाल कला का मनोवैज्ञानिक अध्ययनः–

1904 ई0 में लेबिनस्टीन ने 14 वर्ष तक के बच्चों की कला पर शोधपूर्ण कार्य किया जिसमें पाया गया कि बच्चों को अनुपात का ज्ञान नहीं होता। जर्मनी के म्यूनिख स्कूल के सुपरिंटेंडेंट कमिश्नर ने बच्चों की बनाई गई चित्रों के अध्ययन की बाद कहा कि मैं बच्चों में लड़के अच्छी चित्रकारी करते हैं जबकि अलंकरण में लड़कियाँ दक्ष होती है। बालक लगातार अभ्यास से कौशल प्राप्त करता है। हिलगार्ड गटरिज तथा गेसिल आदि मनोवैज्ञानिकों का कथन है कि महत्वपूर्ण बात यह है कि वह कौशलों को किस प्रकार सीखता है महत्वपूर्ण यह नहीं कि बालक कौशलों को कब सीखता है।

गैरीसन के अनुसार पहले–पहले बालक की भुजाएं और हाथ एक साथ काम नहीं करते। उनकी गतिविधियां अलग–अलग होती है। जैसे–जैसे बालक का अभ्यास बढ़ता जाता है थकान गलतियां तथा निरर्थक गतिविधियां कम होती जाती हैं और गति व विशुद्धता बढ़ती जाती है। इससे बालक को आत्म संतुष्टि प्राप्त होती है और वह अपनी गतिविधियों में सुधार लाने का प्रयास करता है।

बालक के द्वारा बने चित्रों से हम उसकी कुशलता का परिचय कर सकते हैं। इस अवस्था में जब बालक कुछ नियम सीख लेता है तो चित्रों को किसी सीमा के अंदर बनाने लगता है। यह कार्य करने के लिए वह श्यामपट्ट या अन्य किसी धरातल का भी प्रयोग कर सकता है। इस प्रकार बाल कला के कई चरण हैं। जिनमें अभ्यास करते–करते वह अपनी कला के रचनात्मक विकास को उचित दिशा में ले जा सकता है। अतः बाल्यावस्था सीखते रहने का अभ्यास की एक महत्वपूर्ण अवस्था है।

चित्र प्रवृत्ति से बाल कला का विकास

बाल कला के विकास में बालकों की चित्र प्रवृत्ति की महत्वपूर्ण भूमिका है। बालक पुस्तकों व पुस्तिकाओं में रेखांकन करना घर की दीवारों पर कीटमकारी करना, बिस्तर पर रेखांकन करना या जो कुछ भी उसकी पहुंच तक है कुछ भी अछूता नहीं रह पाता। यहां तक कि कभी–कभी वह अपने हाथ–पैरों पर भी चित्रण बना देता है। हाथ में पेंसिल चौक या अन्य कोई तूलिका आ जाए बस वहीं पर चित्र बनने शुरू हो जाते हैं।

हरबर्ट रीड के अनुसार उनकी पुस्तक ''एजुकेशन थ्रू आउट'' में बच्चों की चित्रकला की सात अवस्थाएं बताई गई हैं। गेसल तथा थॉम्पसन का कथन है कि बालक के लिए बनाया हुआ चित्र उतना महत्व नहीं रखता जितना कि चित्र बनाने की क्रिया। चित्रांकन करते समय बालक के मन में जो–जो भाव होते हैं वे सब उसके द्वारा अंकित चित्र में आ जाते हैं। बालक को जिन–जिन वस्तुओं का स्मरण होता है, उन्हें ही वह अंकित करता है। चित्र का आकार आदि ठीक बन रहा है या नहीं छोटे बालक का इसकी ओर ध्यान नहीं जाता। बड़े बालकों की अपेक्षा छोटे बालक रंगों में अधिक रूचि लेते हैं। बालक की चित्रांकन के विषय भी उसकी आयु वृद्धि के साथ बदलते रहते हैं। वे पहले मानव आकृति बनाते है घर और वृक्ष भी उनके प्रिय विषय होते हैं। बाद में जानवरों के चित्र भी बनाने लगते हैं। गुडइनफ का कथन है, कि उच्च वर्ग के बालकों में विषयों की दृष्टि से अधिक विविधता पाई जाती है। गुणात्मक दृष्टि से भी उनके द्वारा बनाए गए चित्र अधिक अच्छे होते हैं।

एन.ई.ए. 2014 के अनुसार बाल कला से ही कार्टून चित्रण का जन्म हुआ, आज के आधुनिक युग में इसी कला से प्रेरित होकर एनीमेशन और 3–डी, चलचित्र आदि कलाओं का विश्व स्तर पर विकास हो रहा है। यदि हम समकालीन चित्रों का अध्ययन करें तो अधिकांश कृतियों में बाल कला की पूरी छाप पड़ती है जिन्हें हम आधुनिक चित्र शैली का नाम देते हैं। भारत में बच्चों की कला पर अध्ययन तथा विशेष रुचि लेने वाले श्री शंकर का नाम प्रसिद्ध है। यह दिल्ली में प्रतिवर्ष बाल चित्र प्रतियोगिता का आयोजन विश्व स्तर पर करते थे। आज

इसी प्रकार की प्रतियोगिताएं खण्ड, जिलों, राज्यों के आधार पर विभिन्न कला संस्थाऐं भी समय–समय पर आयोजित करती हैं।

इससे स्पष्ट होता है कि आधुनिक कला के युग में बाल चित्रकला कितनी विशिष्ट होती जा रही है। बी. डब्लू.एण्ड बी.डी. 2015 के अनुसारबाल कला के क्षेत्र में नए–नए प्रयोग किए जा रहे हैं। बाल कला बालक की पृष्ठभौमिक वातावरण पर भी निर्भर करती है। इन बालकों द्वारा बनाए चित्रों से हम उनके क्षेत्रीय स्तर की विभिन्नता का ज्ञान कर सकते हैं। जैसे–शहरी व ग्रामीण बच्चे, घुमंतु जीवन के लोगों के बच्चे, शारीरिक व मानसिक रूप से अक्षम बच्चे, पिछले क्षेत्रों के बच्चों की चित्रकला इत्यादि। बाल कला का विकास उनके स्वतंत्र वातावरण व उनकी भावनात्मक सोच पर निर्भर करता है। बाल कला पर आयोजित प्रतियोगिताओं के आधार पर बाल कलाकारों के कौशल का मूल्यांकन औपचारिक रूप से किया जाता है, कि कुछ बच्चों की चित्र बनाने की प्रवृत्ति स्वभाविक होती है तथा कुछ बच्चे चित्र बनाना अपना उद्देश्य समझते हैं।

अतः बालक कला वास्तव में एक आनंददायक कला है। जो आनंद बच्चों के चित्र देखकर आता है, वह कहीं नहीं। फिर भी हम उन्हें झणिक श्रेणी में रखते हैं। यही कारण है कि बाल कला के वास्तविक स्वरूप का अध्ययन अभी तक कुछ अधूरा सा लगता है। बाल कला के सृजनात्मक अवलोकन से उनके चित्रों में अभिव्यक्त मूल्यों को विकसित रूप से दिया जा सकता है। इसके लिए बाल कला को एक झणिक आनंद ही नहीं बल्कि इसमें विद्यमान कल्पनात्मक स्वरूप को समझना आवश्यक है।

कला एक अस्पष्ट रेखांकन (घसीटन) के साथ शुरू होती है। सभी बच्चों को किसी सतह पर एक क्रेयॉन या पेंसिल को पकड़कर एक निशान छोड़ने में बहुत खुशी होती है। चिन्ह बनाने या पेंसिल घसीटना (स्क्रीबलिंग) का यह रूप कला के साथ बच्चों की प्रथम आत्म–आरंभिक मुठभेड़ों का प्रतिनिधित्व करता है। बच्चे आम तौर पर साढ़े चार साल की उम्र में लिखना शुरू करते हैं। बाल कला के अधिकांश पर्यवेक्षकों का मानना है कि बच्चे किसी चीज की तस्वीर बनाने के लिए नहीं, बल्कि वे सतह पर अंकन करके आनंद लेन हेतु ऐसा करते हैं। रिट.एस.लोंग.एण्ड.बेसटोन. 2016के अनुसारएक बच्चा कोई भी आकृति या चित्र बनाकर यह कह सकता है कि यह उसकी मां है किंतु दूसरे ही दिन में वह बच्चा उस चित्र को नहीं पहचानता और वह यह कह सकता है कि यह मेरी दादी हैं। वयस्कों के लिए इन चित्रों को न तो पहचानने योग्य और न ही बच्चे द्वारा किए गए शुरूआती आड़ी–तिरछी रेखाओं (स्क्रीबल्स) से उल्लेखनीय रूप से अलग हो सकता है।

बच्चों के लिए शिक्षकों और माता–पिता की भूमिका

स्क्रिब्लिंग आंतरिक रूप से पुरस्कृत है और इस प्रकार इसको कोई विशेष प्रेरणा की आवश्यकता नहीं है। शायद शिक्षक या माता–पिता द्वारा किए जा सकने वाले सबसे अच्छे योगदान में बच्चों को उचित सामग्री और स्क्रिब्लिंग के लिए प्रोत्साहित करना है। उपर्युक्त कला सामग्री का चयन करने में, क्रेयॉन, गैर–विषाक्त मार्कर, बॉलपाइंट पेन और पेंसिल जैसे उपकरणों को एक माध्यम के रूप में प्राप्त कराना, जो उन्हें आसानी से अपने चित्रांकन पर नियंत्रण प्राप्त करने में सक्षम बनाता है।

समाज में बच्चों का स्थान

प्रत्येक समाज बच्चों की इकाई से ही विकसित होता है। बालक का सामाजिक जीवन वह वास्तविक जीवन है, जहां वह अपने पूर्व व्यवहार और वंशानुक्रम के गुणों आदि को लेकर प्रकट होता है। यहां पर बालक को अन्य व्यक्तियों के दर्शन होते हैं तथा उसके संपर्क में आने का अवसर मिलता है। बालक के कला विकास के लिए सबसे महत्वपूर्ण यहीं क्षेत्र है जहां पर वह अपनी कला में परिवर्तन व सृजनता एवं विभिन्न प्रकार की शैलियों और तकनीकों को आधार बना सकता है।

बच्चों में कला विकास के लाभ

भाषा विकास

बहुत छोटे बच्चों के लिए, कला बनाना या इसके बारे में करना–रंग, आकार और कार्यों के लिए शब्दों को सीखने के अवसर प्रदान करती है। जब बच्चा एक वर्ष के रूप में युवा होते हैं, तो माता–पिता सरल गतिविधियों को कर सकते हैं जैसे कागज को गुडमुडी करके इसे ''गेंद'' कहते हैं। प्राथमिक विद्यालय से, छात्र अपनी रचनाओं पर चर्चा करने के लिए वर्णनात्मक शब्दों का उपयोग कर सकते हैं।

निर्णय लेने

कला सन्दर्भ में एक अमेरिकी रिपोर्ट 2015 के अनुसार, कला शिक्षा समस्या सुलझाने और आलोचनात्मक सोच कौशल को मजबूत करती है। कला बनाने के दौरान निर्णय लेने और निर्णय लेने का अनुभव जीवन के अन्य हिस्सों में चलता है। एक कला शिक्षक और बच्चों की कला शिक्षा के बारे में कई पुस्तकों के लेखक मैरीएन कोहल कहते हैं, ''यदि वे नए विचारों की खोज और सोच और प्रयोग कर रहे हैं और कौशिश कर रहे हैं, तो रचनात्मकता को खिलने का मौका है।''

विजुअल लर्निंग

ड्राइंग, एक स्ट्रिंग पर मिट्टी और थ्रेडिंग मोती के साथ मूर्तिकला सभी दृश्य–स्थानिक कौशल विकसित करते हैं, जो पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं। यहां तक कि टॉडलर (छोटे बच्चे) भी जानते हैं कि एक स्मार्ट फोन या टैबलेट कैसे संचालित करें, जिसका अर्थ है कि बच्चे पढ़ने से अधिक दृश्यों में अधिक रूचि लेते हैं। अर्थात बच्चे डिजीटल मीडिया, किताबें और टेलीविजन से चित्रों या त्रि–आयामी वस्तुओं से ज्ञान प्राप्त करते हैं।

उत्तरी इलिनोइस विश्वविद्यालय में कला और डिजाइन शिक्षा के प्रमुख डॉ केरी फ्रीडमैन कहते हैं, ''माता–पिता को यह पता होना चाहिए कि बच्चों को अब अतीत की तुलना में ग्राफीक स्रोतों से बहुत कुछ सीखना है।'' ''बच्चों को पाठ और संख्याओं के माध्यम से जो कुछ भी सीख सकता है उससे दुनिया के बारे में और जानना चाहिए। कला शिक्षा छात्रों को सिखाती है कि विजुअल जानकारी की व्याख्या, आलोचना और उपयोग कैसे किया जाए और इसके आधार पर विकल्पों को कैसे बनाया जाए।'' ग्राफिक प्रतीकात्मकता जैसे दृश्य कलाओं के बारे में ज्ञान विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

खोज प्रवृत्ति को बढावा देना

जब बच्चों को खुद को व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है और कला बनाने में जोखिम लेते हैं, तो वे नवाचार की भावना विकसित करते हैं, जो उनके वयस्क जीवन के लिए महत्वपूर्ण है। कला प्रक्रिया और सोचने के अनुभव को प्रोत्साहित करने और चीजों को बेहतर बनाने का तरीका है।

बेहतर शैक्षिक प्रदर्शन

अध्ययन से पता चला है कि कला और अन्य उपलब्धि के बीच एक सहसंबंध है। कलाओं के लिए अमेरिकियों की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि युवा लोग जो कला में नियमित रूप से भाग लेते हैं, वे गणित में भाग लेने के लिए अकादमिक उपलब्धि के लिए चार गुना अधिक अच्छा प्रदर्शन करते हैं।

निष्कर्ष

बाल कला में बाल विकास के महत्वा से सम्बन्धित साहित्यों की समीक्षा के पश्चात यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि हमारे जीवन में कला का महत्व एक बड़े स्तर पर काफी मान्यता प्राप्त है। कला हर जगह है, जो हमें दैनिक आधार पर प्रभावित करती है, चाहे हम इसे महसूस करें या नहीं। जिस कला से हम घिरे हुए हैं, उसके साथ यह चित्रकला, संगीत या यहां तक कि वीडियो भी हमारे मनोदशा और भावनाओं पर एक बड़ा प्रभाव डालती है। अनुसंधान और सांख्यिकी पुष्टि करते है कि यह शिक्षा कई समस्याओं को हल करने में मदद करती है और महत्वपूर्ण सोच कौशल को बढ़ाती है। सभी बच्चे अकादमिक रूप से बेहतर नहीं होते इसलिए कला उनके भीतर के कलाकार को खोजकर उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए तथा जीवन के अन्य क्षेत्रों में आगे बढ़ने के लिए कला उत्कृष्टता प्रदान करती है और साथ ही करियर बनाने का अवसर भी प्रदान करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

किताबें और पत्रिकाओं

1. *Child Development And Education, By: David Elkind*
2. *Child Developmen Principles & Perspectives By: Joan Littlefield Cook And Greg Cook*
3. *CREATIVITY Its Place In Education By: Wayne Morris*
4. *YOUNG CHILDREN AND THE ARTS By: Sara Goldhawk, Senior Project*
5. *Developing Young Children Creativity: What Can We Learn From Research? Research Journal Autumn 2004 / Issue 32*
6. *What Is Child Art? Research Journal Craig Roland 1990, 2006. 5.*
7. *Developing Young Children Creativity Through The Art: What Does Research Have To Offer? Paper Presented To An Invitational Seminar, Chadwick Street Recreation Centre, London, 14 February, 2001*
8. *National Endowment For The Arts. (2014). Imagine! Introducing Your Child To The Arts. Washington, DC: National Endowment For The Arts. Retrieved From Https://Www.Arts.Gov/Publications/Imagine-Introducing-Your-Childarts*
9. *Vlismas, W., Malloch, S., & Burnham, D. (2015). The Effects Of Music And Movement On Mother–Infant Interactions. Early Child Development And Care, 183, 1669-1688. DOI: 10.1080/03004430.2012.746968*
10. *Ritblatt, S., Longstreth, S., Hokoda, A., Cannon, B. N., & Weston, J. (2016). Can Music Enhance School-Readiness Socioemotional Skills?. Journal Of Research In Childhood Education, 27, 257-266. DOI: 10.1080/02568543.2013.796333*
11. *Children's Drawings And The Evolution Of Art By: J. Gavin Bremner*
12. *बर्मा, अविनाश बहादुर–भारतीय चित्रकला का इतिहास (2002) प्रकाश बुक डिपो, बरेली। पृ0सं0–8*
13. *शर्मा, लोकेश चंद्र–ए ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ इंडियन पेंटिंग (1979), गोयल पब्लिशिंग हाउस शिवाजी रोड, मेरठ। पृ0सं0–219, 220, 221*
14. *शर्मा, लोकेश चंद्र–भारतीय चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास (2008), कृष्णा प्रकाशन मीडिया, गोयल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ। पृ0सं0–172*
15. *योगेंद्रजीत, भाई–बाल–मनोविज्ञान (1964), विनोद पुस्तक मंदिर, हॉस्पीटल रोड, आगरा। पृ0सं0–109,110*
16. *शुक्ल, लाल जी राम–बाल–मनोविज्ञान (1957) नंद किशोर एंड ब्रदर्स, वाराणसी। पृ0सं0–177, 189*
17. *योगेंद्रजीत, भाई–बाल–मनोविज्ञान (1964), विनोद पुस्तक मंदिर, हॉस्पीटल रोड, आगरा। पृ0सं0–243*

इंटरनेट

18. *http://www.gwinnett.k12.ga.us/gcpsmainweb01.nsf/16DF1A5AE7EF8D7285275A80073E69/$file/InterpretingChildren'sHumanFigureDrawings.pdf*
19. *http://www.treehut.in/Data/Sites/1/media/w1w/adamya-bhatt.jpg*
20. *http://www.treehut.in/Data/Sites/1/media/w1w/adnan-khan.jpg*
21. *http://www.countrynewsonline.org/senior/2012/nov/wilson-child-art-important-in-our-lives*
22. *http://ww.theodysseyonline.com/10-reasons-why-arts-are-important-in-our-lives*
23. *http://targetstudy.com/articles/importance-of-art-in-human-life.html*
24. *http://www.pbs.org/parents/education/music-arts/the-importance-of-art-in-child-development/*
25. *http://www.childrenbooktrust.com/sicc.html/*